Samanjasya सामंजस्य **Volume 01, Number 02, 2024**
Page Number: 48 - 58

आज़ादी के आन्दोलन में वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली और गढ़वाल राइफ़ल के जवानों का योगदान

हरेन्द्र सिंह असवाल[1], §

शोध सारः आज़ादी के आन्दोलन में देश की सामान्य जनता ने जो योगदान दिया उसकी खोज बीन करना हमारा उद्देश्य है । देश के कोने -कोने से आज़ादी का बिगुल फूँकने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों की कुर्बानियों को नये ढंग से मूल्यांकन की ज़रूरत है । वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली ब्रिटिश सेना के ऐसे ही सिपाही थे जिन्होंने ने आज़ादी की माँग करने वाले सीमान्त गांधी के साथियों पर अंग्रेज आफिसर द्वारा दिये गये आदेश के खिलाफ सीज फायर का आदेश अपने साथियों को दिया । 23 अप्रैल 1930 की इस घटना को इतिहास में पेशावर कांड के रूप में जाना जाता है । इसके खिलाफ अंग्रेज सरकार ने उनके पैंसठ साथियों को पहले मौत की सजा सुनाई फिर आजन्म कारावास की सजा झेली । आज़ादी के बाद भी इन सिपाहियों को सरकार ने किसी तरह का उचित सम्मान नहीं दिया । अब समय आ गया है उनकी कुर्बानियों को याद करने का ।

संकेत-सूचक शब्दः अंग्रेज, स्वतंत्रता आंदोलन, गढ़वाल, सैनिक विद्रोह ।

मूल तथ्य

चन्द्र सिंह गढ़वाली का जन्म उन्हीं के अनुसार “मेरा जन्म साधारण स्थिति के किसान परिवार में पौष शुक्ल संवत् 1948 (सन् 1891) को हुआ था (वी च ग रा सां पृष्ठ 24) ।” अपने लोगों को बचाने के लिए चौदह साल के चन्द्र सिंह ने पौड़ी के तत्कालीन अंग्रेज कमिश्नर पर राख की पुड़िया फेंकने का दुस्साहस किया । यही आगे ब्रिटिश सेना में हवलदार बना । 1 मई 1914 हवलदार मस्तू सिंह जब रौसेणा आया तो वहीं चन्द्र सिंह के घर पर खाने की व्यवस्था की गई ।

चन्द्र सिंह ने पूछा “क्या आप मुझे भर्ती कर लेंगे ?

[1] हिंदी विभाग, ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), जवाहरलाल नेहरू मार्ग, दिल्ली - 110002, भारत।
Email: harenders.aswal@gmail.com
§ Manuscript received: 20-12-2024; accepted: 30-12-2024. Samanjasya, Volume 01, Number 02 © Zakir Husain Delhi College, 2024; all rights reserved.

भर्ती तो कर सकता हूँ लेकिन क्या तुम्हारे पिता मेरे साथ तुम्हें जाने के लिए राज़ी होंगे ? चन्द्र सिंह की बाँछें खिल गईं और बड़े उत्साह के साथ कहा –

हवलदार जी आप माँ बाप की बात छोड़ दीजिए। सिर्फ़ यह बतलाएँ कि मुझे भर्ती कर लेंगे न । मैं किसी तरह से आपके पास आ जाऊँगा (वीर च ग रा सां पृष्ठ 24) ।"

दोनों ने अपना वचन निभाया । बचपन से ही अपनी ज़िद का पक्का और ज़ुबान पर मर मिटने वाला ऐसा व्यक्ति सेना के उपयुक्त भी और नहीं भी । दोनों बातें उसके जीवन भर चलती रही। 11 सितंबर 1914 को चन्द्र सिंह 2/38 गढ़वाल राइफ़ल की छठी कंपनी के 12वें सेक्शन में रख लिए गए । चन्द्र सिंह का रेजीमेंट न० 1900 और गुमान सिंह की 1901 ।

जमादार ने रंगरूटों को क़सम खिलाई

"मैं रंग रूट चन्द्र सिंह बेटा जाथली सिंह का परमेश्वर भगवान को जान मान के धर्म के रास्ते से प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं हमेशा अपने मालिक मुअज्जम कैसर हिन्द और उनके जानशीनों (उत्तराधिकारियों) का नमक हलाल नौकर बना रहूँगा, और जहाँ जाने का हुकुम होगा वहाँ जाऊँगा, चाहे उसमें जान का भी डर हो । मेरे ऊपरकोट ओहदेदार (नमन कमिशंड ऑफ़िसर) मुकर्र किया गया है या होगा उसके सारे हुकुमों को मानूँगा, चाहे उसमें जान का भी ख़तरा हो (रा०सां० पृष्ठ 28)।" इस तरह से एक सैनिक के रूप में 99 रुपये का मासिक वेतन पर सैनिक के रूप में भर्ती हो गये । यहाँ से जीवन और संघर्ष की कहानी की शुरुआत होती है । यहाँ लैंसीडाउन से उन्हें जहाज़ से अदन होते हुए 14 दिन बाद 14 अगस्त को फ्रांस के मार्सेलो बन्दरगाह पहुँच गया । चन्द्र सिंह दो महीना और आठ दिन फ्रान्स में रहा जहां जीवन और मौत, युद्ध की भीषणता से सामना हुआ ।

1917 को गढ़वाली पलटन दिल्ली से रेल में सवार होकर कराची पहुँची । कराची बंदरगाह से 3अप्रैल 1917 को उनका जहाज़ बसरा पहुँचा । सभी जवान मेसोपोटामिया की धरती पर उतरे । वहाँ से बग़दाद शरीफ़ से चार दिन पैदल यात्रा करके पलटन सीरिया के किसी बॉर्डर के गांव पहुँची । 27-28 सितंबर 1917 को रमादी का युद्ध । इस युद्ध में कई गढ़वाली सैनिक मारे गये । कंपनी के। सूबेदार संग्राम सिंह नेगी और कई सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए । कान और बग़दाद(ऐना) में फिर 25-26 मार्च 1918 । ये युद्ध मोर्चे की कुछ झलकियां हैं । इसके बाद देश की राजनीति नई करवट ले रही थी । युद्ध से देश लौटते स्टेशनों पर लोगों से मिलते उन्हें नये अनुभव हो रहे थे । स्वाधीनता आन्दोलन से वे परिचित हो रहे थे । इस स्वाधीनता आन्दोलन ने उत्तराखण्ड पर अब विचार करने की ज़रूरत हैम। स्वाधीनता आन्दोलन में उत्तराखंड की जनता की भूमिका पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है । मुझे लगता है हमें अपने उन सैनिकों की क़ुर्बानियों के बारे में नये सिरे से सोचने और उसे मूल्यांकित करने की ज़रूरत है, जिन्होंने 23 अप्रैल 1930 को पेशावर में ब्रिटिश सरकार के सिपाही होते हुए भी, सरकार के आदेश को मानने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि "हम निहत्थी आज़ादी की माँग कर रही जनता पर गोलियाँ नहीं चला सकते, उसके लिए हम हर क़ुर्बानी देने को तैयार हैं सरकार चाहे तो हमें गोली मार सकती है (वी च ग रा सां पृ 1)।"

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस अंग्रेज़ी हुकूमत को भारत में जड़ें जमाने में भी यहाँ के सैनिकों की बड़ी भूमिका रही है। सन 1796 में नेपाल के राजा रण बहादुर थापा के सेनापति अमरनाथ थापा ने गढ़वाल और कुमाऊँ पर बर्बर अत्याचार करके संपूर्ण क्षेत्र पर अपना अधिकार क़ायम कर लिया। 14 मई 1804 को गढ़वाल के राजा प्रद्युम्न शाह देहरादून चुक्खू मोहल्ले में गोरखों के साथ युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए। उनके बेटे सुदर्शन शाह वहाँ से भाग कर सहारनपुर, हरिद्वार, कनखल आदि स्थानों पर छिपते रहे। 1815 में अंग्रेजों के साथ सुदर्शन शाह की संधि होती है जिसमें, गढ़वाल की 57-57 पट्टियां विभाजित हुई, जो हिस्सा अंग्रेजों को मिला वह ब्रिटिश गढ़वाल कहलाया, जो सुदर्शन शाह को मिला वह टिहरी गढ़वाल। इस तरह ब्रिटिश गढ़वाल और कुमाऊँ अंग्रेजों के अधीन हो गये। 1816 में फिर संगोली की संधि नेपाल और अंग्रेज़ों के बीच हुई जिसे आज भी दो देशों की सीमा माना जाता है। यहीं से भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य मज़बूत होता है। गढ़वाल और कुमाऊँ के संसाधनों पर क़ब्ज़ा करने के कारण जो बेरोज़गारी पैदा हुई उसने पुरानी स्थितियों को आमूलचूल बदल दिया। पहले जब राजशाही थी, तो राजा के सामन्त ही युद्ध लड़ने के लिए अपने मातहतों को इकट्ठा करते थे। उन्हें किसी तरह की तनख़्वाह नहीं मिलती थी। खेती, जंगल और उससे जुड़े संसाधनों से ही लोग गुज़ारा करते थे। संसाधन ख़त्म होते ही अंग्रेजों ने सेना में भर्ती शुरू की और ये सैनिक जिनकी अब नियमित आय होने लगी थी, उन्होंने बड़ी बहादुरी और वफादारी से अंग्रेजों का साथ दिया, जिसका परिणाम हुआ कि जहां भी अंग्रेजों ने लड़ाई लड़ी वहाँ ये पहाड़ी सैनिक उनके सबसे वफादार योद्धा साबित हुए। अंग्रेजों ने उन्हें मार्शल क़ौम के रूप में अनेक प्रकार के मैडलों और पदोन्नतियों से नवाज़ा और अपने साम्राज्य का दुनियाँ भर में विस्तार किया।

जिन लोगों के आय के साधन नहीं रह गये थे एक तो वे, दूसरे हिन्दू धर्म की जातिवादी व्यवस्था को भी तोड़कर उन्होंने हर वर्ग के लोगों को अपनी सेना में भर्ती किया जिससे एक नयी तरह की सैनिक व्यवस्था खड़ी हुई। इन तमाम कारणों से अंग्रेजों ने विश्वभर में जहां भी युद्ध लड़ा वहाँ ये भारतीय सैनिक उनके लिए लड़े। तब तक देशभक्ति की जगह राजभक्ति प्रमुख थी। ये सभी सैनिक राजभक्ति के प्रमुख स्तंभ थे।

जब देश में आज़ादी का आन्दोलन शुरू हुआ तब एक तरह की कश्मकश पैदा होने लगी। 1857 में जब पहला स्वतन्त्रता संग्राम हो रहा था वहाँ सेना के बीच एक दरार नज़र आने लगी, कुछ सैनिकों ने विद्रोह किया, कुछ ने अंग्रेजों का साथ दिया, परिणाम स्वतन्त्रता आन्दोलन असफल हो गया। इस विद्रोह ने अंग्रेजों को एक सीख दी कि यदि इस देश पर क़ब्ज़ा बनाए रखना है तो हिन्दू और मुसलमानों की एकता को विभाजित करना होगा, दोनों में दरार पैदा करनी होगी, तभी हम सफल हो सकते हैं, जब तक इन दोनों में फूट नहीं पड़ेगी हम यहाँ टिक नहीं सकते। उन्होंने दो संप्रदायों के बीच फूट डाली और अपना साम्राज्य क़ायम रखा।

गांधी जी ने इस देश की स्थिति को देखा, अंग्रेजों की नीति को समझा और वे कांग्रेस से जुड़ गये। उनका दक्षिण अफ़्रीका का अनुभव यहाँ काम आने लगा। गांधी जी ने अपनी विशेष रणनीति के तहत, उस समय देश में जो विभिन्न क्षेत्रीय आन्दोलन आज़ादी के लिए लड़े जा रहे थे उनसे संपर्क किया,

उनके साथ वार्ताएँ की और इस तरह से वे हर वर्ग, हर समुदाय, हर क्षेत्र के लोगों से जुड़ते चले गये। उन्होंने चंपारन के किसानों की व्यथा का अध्ययन किया और उनका साथ देने चंपारन के किसान आन्दोलन में कूद गये। चंपारण ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर आज़ादी के आन्दोलन का नेतृत्व करने का मौन अधिकार प्रदान कर दिया।

गांधी जी ने अपनी रणनीति में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन यह किया कि उन्होंने उसे धार्मिक अहिंसात्मक स्वरूप प्रदान किया। प्रेम और अहिंसा ये अब तक लड़ाई के औज़ार नहीं थे। अंग्रेज युद्ध लड़ना तो जानते थे लेकिन हथियारों के आधार पर। उन्हें इस तरह के युद्ध लड़ने की कोई समझ नहीं थी। उनके लड़ने के तरीक़े बर्बरतापूर्ण थे। सत्य, अहिंसा और प्रेम से कैसे निपटना है यह उनकी संस्कृति का कभी हिस्सा नहीं रहे। इस काम में भारतीय चिंतन परंपरा ने कई मानदंड पहले क़ायम कर लिए थे। बौद्ध धर्म, जैन धर्म इसके जीते जागते प्रमाण थे। गांधी जी यह भी जानते थे कि ताक़त के बल पर अंग्रेजों को हराया नहीं जा सकता, साथ ही सामान्य जन भी युद्धों में साथ नहीं देगा, वह हिंसा के पक्ष में साथ नहीं हो सकता। इसलिए जिन हथियारों से अंग्रेजों का सामना नहीं हुआ, जिनसे लड़ने का उनका कोई तजुर्बा नहीं है, और भारतीय जनता जिसमें उनका बढ़चढ़कर साथ दे सकती है, उनका उपयोग करके ही अंग्रेजों को परास्त किया जा सकता है। परिणामस्वरूप सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, नमक आन्दोलन, स्वदेशी का उपयोग, विदेशी वस्तुओं का विरोध जैसे तरीक़ों से एक तो लोक जागरण का काम किया साथ ही राजभक्ति की जगह देश भक्ति की भावना को जगाने का काम किया। इन सभी का बहुत गहरा असर सामान्य जनता पर हुआ। लोक जागरण के साथ ही उन्होंने जाति प्रथा और ऊँच - नीच के भेदभाव को भी दूर करने की कोशिश की। धर्म सुधार भी आज़ादी के आन्दोलन का प्रमुख हिस्सा बना। इन सभी बातों का समाज में ही नहीं राजनीति और सेना में भी असर हो रहा था।

जब चन्द्र सिंह सेना में थे तो उन्हें सहारनपुर में अचानक सेना से आदेश मिला कि वे सहारनपुर में जो दो बुजुर्ग कांग्रेसी जिनको बंदी बनाया गया था उनको बंदी रखने का काम करें। जो हवलदार उन्हें पहले देख रहे थे वे अचानक छुट्टी पर गये और यह ड्यूटी मिली चन्द्र सिंह को। साथ में हिदायत मिली कि वे विद्रोही क़ैदियों से कोई बात न करें।

चन्द्र सिंह ने पहले एक दो दिन तो उनसे बात नहीं की लेकिन फिर सोचा "ये भी तो हमारे ही देश के आदमी हैं। इनसे बातचीत करने मे क्या बुराई है?" दूसरे दिन उन्होंने पूछा, "बूढ़े बाबा इस, बुढ़ाई में आप क्यों क़ैद किये गये ? क्यों सरकार बहादुर के खिलाफ हुए ?" वे उन्हें समझाने लगे "अंग्रेज़ी राज्य में कितना अमन चैन है। किसी के पास कितना भी रुपया हो, कोई छीन नहीं सकता। अंग्रेजों ने हमें रेल, तार, डाक, अस्पताल का कितना सुभीता दे रक्खा है। न्याय के लिए कितनी बड़ी बड़ी अदालतें क़ायम कर दी है (पृष्ठ ८५)?" सब सुनने के बाद दोनों बुजुर्ग कांग्रेसियों ने उन्हें समझाया कि यह हमारी सरकार नहीं है, इन्होंने हमें गुलाम बनाया है। इनका व्यवहार हिन्दुस्तानियों के साथ गुलामों का सा है, वे हमारे देश के सभी संसाधनों को लूटकर अपने देश ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा "तुम जानते हो दुनियाँ में सब जगह अंग्रेजों का राज्य नहीं है। जापान चीन, तुर्की, आदि बड़े बड़े देश

हैं जो अंग्रेज़ों के हाथ में नहीं हैं और जिनकी अपनी अपनी सरकारें हैं, वहाँ भी तो रेल, तार, डाक, अस्पताल आदि हैं ? यदि यहाँ अंग्रेजों का राज न होता तो हम भी इन सभी चीजों को बना लेते ।जब जैसा जमाना आता है तब आदमी उसके अनुसार नई नई चीज़ें तैयार करता है (पृष्ठ ८५)।" इन बातों का चन्द्र सिंह पर बड़ा असर हुआ ।

वे कुछ ही दिन उनके साथ रहे लेकिन उनकी बातों को सुनकर वे अन्दर ही अन्दर मनन करने लगे । 1919-20 में जब उत्तराखंड में भारी अकाल और हैज़ा फैली तो उसमें आर्य समाज के नव युवकों ने जो सेवा और मेहनत की उनको देख कर फिर वे प्रभावित हुए । वे चुपके चुपके आर्य समाज के प्रभाव में आये । वे जब सेना में ड्रिल मास्टर बने तो अपनी टुकड़ियों को धीरे-धीरे यह समझाते रहे कि यह जो अंग्रेज सरकार है यह हमें गुलाम बनाए हुए हैं । वे नये रंगरूट तैयार तो कर रहे थे लेकिन अन्दर से गांधी जी, आर्य समाज, कांग्रेस की बातों को ध्यान से सुन रहे थे । वे छुट्टी लेकर गांधी जी से मिलने देहरादून गये, रास्ते में पता चला गांधी जी अंबाला में हैं वे अंबाला के निकले लेकिन, रास्ते में जगाधरी में पता चला वे दिल्ली में हैं वे दिल्ली के लिए चले दिल्ली में वे गांधी जी से मिलना चाहते थे उन्होंने संदेश भिजवाया लेकिन अन्दर से मोती लाल नेहरू निकले उन्होंने कहा जो कहना है लिख कर दो, उन्हें बाद में पता चला ये मोती लाल नेहरू हैं । मोती लाल नेहरू जी ने उनको बुला कर पूछा क्या कहना चाहते हो , "हम गांधी जी की पलटन में भर्ती होना चाहते हैं," सब कुछ सुनकर मोती लाल जी ने कहा "पहले तुम अपनी पलटन से नाम कटा आओ । फिर कांग्रेस में भर्ती कर लिया जायेगा । यदि इस समय तुम भरती होंगे तो सरकार तुम्हें सख़्त सजा देगी ।" वे फिर बाक़ी छुट्टियाँ गाँव में बिताकर वापस अपनी सेना में चले गये । लेकिन अंग्रेजों की हरकतों और देश के स्वाधीनता आन्दोलन को क़रीब से परख रहे थे । जब वे सैनिकों को ट्रेनिंग देते तो एकान्त में उन्हें समझाते कि अगर अंग्रेज तुम्हें कांग्रेसियों पर जुल्म ढाने के लिए कहें तो उनका कहना मत मानना, ये जो लोग जेलों में हैं, आन्दोलन कर रहे हैं, लाठियाँ खा रहे हैं, गोली खा रहे हैं ये हमारे देश की आज़ादी और ग़ुलामी के खिलाफ लड़ रहे हैं । वे हमारे लोग हैं, अंग्रेजों ने हमें गुलाम बना रखा है । वे इस देश को लूट रहे हैं, ख़िलाफ़त आन्दोलन के समय जब वे मिश्र में थे तो उन्हें लग रहा था अंग्रेज भारतीय सैनिकों के माध्यम से इन पर जुल्म ढा रहे हैं, कमाल पाशा को वे देश भक्त कहते थे, असहयोग आन्दोलन को भी वे देख रहे थे । उत्तराखंड में कुली बेकार प्रथा के खिलाफ जब आन्दोलन हुआ तो वे उसके समर्थक रहे । गोविन्द बल्लभ पत, बद्री दत्त, पांडे, वैरिस्टर मुकुन्दी लाल के बारे में वे सब समझ रहे थे । जब जलियाँवाला बाग का कांड हुआ, लाला लाजपत राय पर लाठियाँ चली वे सब बहुत संवेदनशील ढंग से उस पर नज़र बनाए हुए थे । आर्य समाज का जात -पात, वर्ण -व्यवस्था, के और कर्मकांड के खिलाफ का वे समर्थन कर रहे थे । जब भजन सिंह सिंह के माध्यम से उन्हें पता चला कि एक देश रूस हैं जहां सब बराबर है, वहाँ बोल्शेविक क्रान्ति हो गई तो वे उनके विचारों से भी प्रभावित हुए । लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद जब देश के युवाओं में आक्रोश था उस समय भजन सिंह भी लाहौर में डी ए वी कालेज में पढ़ते थे वहाँ वे "नौजवान भारत सभा" में शामिल हो गये थे । बाद में वे सेना में भर्ती हो गये, लेकिन अपने देश प्रेम और मार्क्सवादी विचारों के कारण बाद में भी चन्द्र सिंह गढ़वाली को प्रभावित करते रहे। अपने अन्तिम समय तक दोनों में मित्रता रही ।

वीर चन्द सिंह गढ़वाली में राहुल सांस्कृत्यायन लिखते है "वह अपने विचारों को पलटन के जवानों में फैलाने लगे, और उसके साथ -साथ इस भावना को भी कि अंग्रेजों की सेवा नहीं देश सेवा हमारा कर्तव्य है।"

वे सैनिकों से कहते "यहाँ से तुम अपनी - अपनी पलटनों में जाओगे, वहाँ तुम्हें अगर कांग्रेसियों पर गोली चलाने का हुक्म दिया जायेगा, तो क्या करोगे ? फिर उनके दिल में देशभक्ति का भाव पैदा करते, अपनी अपनी पलटन के साथियों को समझाना कि देश में क्या हो रहा है, साथ ही पलटन में क्या हो रहा है इसकी खबर सांकेतिक भाषा में हमारे पास भेजना। इसका खूब प्रचार हो रहा है इसकी सूचना हमें भेजना चिट्ठियों में लिखना "यहाँ अच्छी वर्षा हो रही है (पृष्ठ ११९)।"

इन तमाम बातों से ये पता चलता है कि उनका ब्रितानी सरकार के खिलाफ होना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। इसके पीछे एक सुविचारित रणनीति गत फ़ैसला था। इसी बात को लेकर जब वे सैनिकों को समझा रहे थे। हवलदार नारायण सिंह ने कहा चन्द्र सिंह तुम्हें जिस बात की धुन है वह तुम्हें गोली का शिकार बनाएगी, नहीं तो जेल अवश्य डालेगी।

पास खड़े हवलदार शेर सिंह बुटोला को यह बात लग गई, और उन्होंने कहा "अरे जो सच्चे देश भक्त होते है वे जेलों में सड़ रहे हैं लाठियों की मार खा रहे हैं। हम लोग गुलाम हैं देश के साथ ग़द्दारी कर रहे हैं। आख़िर देश तो आज़ाद हो कर रहेगा, उस समय हमारा मुँह काला होगा (पृष्ठ १२०)।" गढ़वाली जी ने जिन सैनिकों को तैयार किया उन्हें पक्की तरह से तैयार किया था। वे सब उनकी बात पर देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार थे। रॉयल गढ़वाल राइफ़ल को पेशावर भेजा गया। वहाँ 20 अप्रैल को बटालियन को हुक्म हुआ, "22 अप्रैल को, ए कंपनी के ओहदेदारों और सरदारों को मस्केटरी की शिक्षा दी जायेगी।" कप्तान मार्टिन चन्द्र सिंह को जानता था। कप्तान ने कहा "जवानों मस्केटरी परेड के लिए पहले मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ। क्या आप जानते हैं हमारी गढ़वाली पलटन को सरकार ने क्यों यहाँ पेशावर भेजा है ?"

ओहदेदारों ने कहा "नहीं"

"सुनो यहाँ के लोगों में 94 फ़ीसदी मुसलमान हैं, सिर्फ़ दो फ़ीसदी हिन्दू हैं। मुसलमान सदा हिन्दुओं को सताया करते हैं। हिन्दू यहाँ के बहुत मालदार हैं।बड़ी -बड़ी कपड़े की दुकानें इन्हीं की हैं। शराब का ठेका भी इन्हीं के पास है। मुसलमान बेचारे हिन्दुओं की दुकानों में आग लगा देते हैं, लूट लेते हैं माल असबाब ही नहीं, औरत, बच्चों को भी पकड़ कर ले जाते हैं। अंग्रेज सरकार उन्हें ऐसा करने की इजाज़त नहीं दे सकती। ——

-शायद हिन्दुओं को बचाने के लिए हमें बाज़ार जाना पड़े, और इन बदमाशों पर गोली चलानी पड़े।"

इस तरह से वे झूठी सूचनाएँ देकर खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खान के खुदाई ख़िदमतगार लोगों के नमक सत्याग्रह आन्दोलन करने वाले कांग्रेसियों पर गोली चलवाना चाहते थे। लेकिन चन्द्र सिंह बाज़ार से

और चुपके चुपके अख़बार मगांकर सारी सूचनाएँ प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने सभी साथियों को अंग्रेजों की चाल समझा दी थी। सबको पक्का कर दिया कि कोई भी निहत्थे लोंगों पर गोली नहीं चलाएगा।

शहर में गहमागहमी थी पलटन भीड़ की तरफ़ संगीनें ताने खड़ी थी नारों से आसमान गूंज रहा था "नारे तकबीर और हज़ारों गलों से आवाज़ उठती अल्ला हो अकबर", "महात्मा गांधी की जय" सेना कहती भाग जाओ गोली चलेगी। लेकिन कोई सुन नहीं रहा था। अंग्रेजों को चन्द्र सिंह पर कुछ शक था उन्हें वहाँ नहीं भेजा लेकिन चन्द्र सिंह ने तिकड़म भिड़ाई और वहाँ पहुँच गये।

कप्तान रिकेट ने हुक्म दिया "गढ़वाली तीन राउंड फ़ायर"

चन्द्र सिंह कप्तान की बाईं तरफ़ खड़े थे, पूर्व निर्णय के अनुसार उन्होंने ज़ोर से कहा - "गढ़वाली सीज फ़ायर" सभी ने "हुक्म सुनते ही सबने अपनी बंदूकें ज़मीन पर टिका दी। एक सिपाही ने अपनी बंदूक़ पठान को दे कर कहा लो भाई अब आप हम को गोली मार दें (पृष्ठ १४७)।"

चन्द्र सिंह ने कहा ये सब लोग निहत्थे हैं हम इन पर गोली कैसे चलायें (पृष्ठ१४८)।

इस घटना का भारतीय आधुनिक इतिहासकार भी एक घटना के रूप में ही वर्णित करते हैं। सुमित सरकार ने अपनी पुस्तक "आधुनिक भारत" में "पेशावर के घटना क्रम के बारे में लिखा" २३ अप्रैल को बादशाह खान और कुछ अन्य नेताओं की गिरफ़्तारी के फलस्वरूप पेशावर में भारी जन उभार आया भीड़ क़िस्सा कहानी बाज़ार में तीन घंटों तक बख्तरबंद गाड़ियों एवं तेज गोली बारी के आगे डटी रही। सरकारी सूचना के अनुसार इस घटना में ३० लोग मारे गये, किन्तु ग़ैर सरकारी आकलन के अनुसार दो ढाई सौ लोगों से कम नहीं मरे थे। गढ़वाल राइफ़ल की एक टुकड़ी के हिन्दू सिपाहियों ने मुसलमान भीड़ पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। बाद में कोर्टमार्शल का सामने करते हुए इन सिपाहियों ने साफ़ कहा "हम निहत्थे भाइयों पर गोलियाँ नहीं चलायेंगे। क्यों कि भारत की सेना बाहरी शत्रु से लड़ने के लिए है। तुम चाहो तो हमें गोली से उड़ा दो"। ब्रिटिश सरकार दस दिन बाद जाकर ५ मई को ही पेशावर में क़ानून व्यवस्था बहाल कर पाई और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में आतंक और मार्शल लॉ का राज स्थापित हो गया (पृष्ठ 329)।

इस घटना ने पूरे अंग्रेज कप्तानों के होश उड़ा दिये। गढ़वाली सैनिकों को बैरक में अंग्रेजों की बटालियन के घेरे में भेजा गया। उन्हें डिस् आर्म किया गया। बन्दी बनाया गया। ब्रिटिश सरकार ने इस घटना को तूल न देने के चक्कर में इसे एक छोटा मोटा विद्रोह का रूप देना चाहा। लेकिन बात इतनी गंभीर थी कि उन्हें डर सताने लगा। उन्होंने 65 सैनिकों को बन्दी बनाया, उन्हें तोड़ने की कोशिश की। उनसे उनको भड़काने वाले का नाम बताने पर दोष मुक्त करने और माफ़ी देने की बात की, लेकिन वे टस से मस नहीं हुए। इस घटना के बारे में रूसी इतिहासकारों ने "भारत का इतिहास" पुस्तक में लिखा "पेशावर की जनता के विरोध के कारण अंग्रेजों को छावनी में शरण लेनी पड़ी। स्थिति को इस बात ने और भी पेचीदा बना दिया गढ़वाल रेजीमेंट के सैनिकों ने विद्रोहियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। ब्रिटिश कमांडरों ने रेजीमेंट को निरस्त्र करके तथा सभी सैनिकों

को नगर से बाहर हटाकर भारतीय सैनिकों को नगर की जनता के पक्ष को जानने से रोका (भारत का इतिहास, प्रगति प्रकाशन मास्को पृष्ठ ५९१)।" इस घटना के बाद जब उन्हें पेशावर से डेरा इस्माइल खां ले जाने के लिए रेल में बिठाया तो जनता उनके सम्मान में खड़ी रही, फूलों की वर्षा करती रही, जिन स्टेशनों पर रेल रुकी वहाँ उनके लिये चाय पानी की व्यवस्था, उनके सम्मान में नारे बाज़ी की । रास्ते में जब दूसरी रेल स्टेशन पर रुकी और उनकी जगह जाने के लिए गोरखा रेजीमेंट उसी जगह खड़ी हुई तो सैनिकों ने उन्हें बताया और उन्हें भी गोली न चलाने के संदेश दिये अंग्रेजों को उन दो रेलों के बीच अपनी अंग्रेज बटालियन खड़ी करनी पड़ी, इसके बाद भी उन्हें वहाँ डर के मारे नहीं भेजा । तीसरी सिख बटालियन को मँगवाना पड़ना। जब उस बटालियन को उन बैरेक्स में भेजा तो गढ़वाली बटालियन ने वहाँ जो नारे, जो बातें लिखी थीं उन्हें देख और पढ़ कर वे भी प्रभावित हुए। जब ये बातें अंग्रेजों को पता चली तो सेना को बैरेक से निकाल कर छोल दारियों में रखा गया, वहाँ सफ़ेदी कर के सब कुछ मिटाने का काम किया गया ।

इस घटना ने अंग्रेजों के होश उड़ा दिए । जिन वफ़ादार सैनिकों के बल बूते उन्होंने पूरी दुनियाँ पर अपना साम्राज्य क़ायम किया था आज वही सैनिक उनके ख़िलाफ़ खड़े हो गये । अंग्रेज चाहते तो इन गढ़वाली सैनिकों को वहीं समाप्त कर सकते थे लेकिन वे जानते इसके कितने घातक परिणाम हो सकते हैं, उन्होंने उन्हें आजन्म काला पानी की सजा सुनाई लेकिन सैनिकों के भूख हड़ताल और जनता के सहयोग के चलते वे उन्हें किसी भी तरह से क्षति नहीं पहुँचा पाये । जिन-जिन जेलों में गये वहाँ के हिन्दुस्तानी जेलरों, जेल के क़ैदियों को जब चन्द्र सिंह गढ़वाली के बारे पता चला तो वे उनका सम्मान करते । जेलर अगर मुसलमान होता तो वह विशेष सम्मान देता । उन्होंने अपने मुकद्मे को सिविल कोर्ट में लाने और अपने साथियों को न्याय दिलाने के लिए वैरिस्टर मुकुन्दी लाल को पैरवी करने की माँग की जो अंग्रेजों को माननी पड़ी ।

चन्द्र सिंह गढ़वाली का अपना जीवन बहुत उथल पुल से भरा रहा । पहली पत्नी उनसे एक साल बड़ी थी लेकिन वह चल बसी । इसकी सूचना उन्हें उनके पिता जाथली सिंह ने दी, पिता ने उनकी दूसरी शादी 13 की पहली पत्नी की छोटी बहन से कर दी, चन्द्र सिंह ने विरोध किया लेकिन पिता नहीं माने । चन्द्र सिंह ने अपने सीनियर सैनिक की अकेली बेटी से जो उनकी हम उम्र थी से विवाह कर लिया । जब पिता को पता लगा वे बहुत नाराज़ हुए । बेटे बहू को घर नहीं घुसने दिया । उन्हें कहीं और रात बितानी पड़ी । इसी बीच माता की मृत्यु पर उन्हें दाह संस्कार नहीं करने दिया । जब जेल हो गई तो वे उनसे मिलने पहुँचे । अब दोनों पत्नियाँ साथ रह रही थी । आख़िर में उनकी पत्नी रही भागीरथी । भागीरथी बहुत सुन्दर थी । उसने आनन्द भवन में एक बच्ची को जन्म दिया । आनन्द भवन में नेहरू जी ने उन्हें भेजा था लेकिन वहाँ उन्हें कोयले के भंडार में जगह मिली । जब उन्हें जेल से छोड़ा गया तो वे आनन्द भवन गये बच्ची और माँ की स्थिति से दुखी हुए, गांधी जी ने उनको सेवाग्राम में रहने को कहा । चन्द्र सिंह जेल से छूटे तो आनन्द भवन में गये वहाँ भागीरथी और दो महीने की बेटी नेहरू जी की सिफ़ारिश के बाद भी दयनीय स्थिति में थी । दोनों वहाँ से अहमदाबाद गये । भागीरथी बेटी के साथ अहमदाबाद रह गई और चन्द्र सिंह को पृथ्वी सिंह के साथ बंबई भेजा गया दोनों की बनी नहीं ।

गांधी जी ने जब नेहरूजी से पूछा कि बड़े भाई का क्या हुआ, तो नेहरू जी ने कहा पृथ्वी सिंह के पास भेजा है। गांधी जी ने कहा था “दो तलवार एक म्यान में कैसे रहेंगीं ”। वही हुआ। वे गांधी जी से मिलने वर्धा आ गये गये। गांधी जी ने कहा “बड़े भाई बिस्तरा क्यों नहीं लाए”। गांधी मनुष्य की नब्ज पहचानने में असाधारण थे। उन्हें बड़े भाई ने विस्तार से बताया। फिर पूछताछ के बाद कहा “कांग्रेस कमेटी की मीटिंग के बाद तुम यहाँ चले आओ मेरे साथ तुम्हें छ महीने रहना होगा जाओ बिस्तरा लेकर आना (जीवनी से पेज २७७)।”

गांधी जी ने भागीरथी के बारे में पूछा।

बड़े भाई ने भागीरथी की चिट्ठी गांधी जी को दे दी।

गांधी जी ने दूसरे दिन कहा “भागीरथी को अहमदाबाद में बहुत तकलीफ़ है”

बड़े भाई ने कहा असन्तुष्ट रहना स्त्रियों का स्वभाव है सब ठीक हो जायेगा।

“नहीं उसे बुलाना है। नहीं तो अनिष्ट हो जायेगा।”

गांधी जी ने तुरन्त मृदुला को टेलीफोन किया कि चन्द्र सिंह की बीबी को इसी वक्त वर्धा भेज दो (वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पृष्ठ २७९)। वहीं सेवा ग्राम में उनके रहने की व्यवस्था की। बेटी का नाम माधुरी था गांधी जी ने उसे बदल कर माधवी किया। लेकिन वहाँ भी वे खुश नहीं थे। इस तरह से उनका जीवन संकटों, और संघर्षों से भरा रहा।

पेशावर की घटना ने अंग्रेजों को सोचने लिए मजबूर कर दिया कि अब उन्हें सतर्क रहना होगा। जिस दिन से पेशावर कांड हुआ उसके बाद अंग्रेजों का साम्राज्य समाप्त होना शुरू हो गया। इसके बाद वे कोई युद्ध नहीं जीते। उनका मानसिक वर्चस्व समाप्त होने लगा। बाद में 1942 का नौ सेना का विद्रोह और आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन इस सैनिक विद्रोह का ही परिणाम था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जब कांग्रेस के अध्यक्ष थे वे उनसे मिले, आख़िर आजाद हिन्द फ़ौज की स्थापना करके अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का ऐलान किया। अब भारतीय सेना भी इस घटना से गुलाम सेना और देश प्रेम के भेद को समझने लगी थी। इन सैनिकों को कितने कष्ट सहने पड़े हम उसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते लेकिन देश के आज़ाद होने के बाद भी उनके साथ जो न्याय होना चाहिए था वह नहीं हुआ। चन्द्र सिंह गढ़वाली को गांधी जी, मोती लाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, से लेकर जमना लाल बजाज, गूजर मल मोदी, गोविन्द बल्लभ पंत, रफ़ी अहमद किदवई, ऐसा कौन सा तत्कालीन बड़ा कांग्रेसी नेता था जो नहीं जानता था लेकिन आज़ादी के बाद भी वे अपने लिए नहीं अपने साथियों की लड़ाई लड़ते हुए समाप्त हुए। अंग्रेजों ने उन्हें बहुत बार जेलों में ऑफ़र भेजा कि माफ़ी माँग लो लेकिन उन्होंने कभी माफ़ी नहीं माँगी। पहाड़ टूट सकता है लेकिन झुकता नहीं। इस बात को हम चन्द्र सिंह गढ़वाली के जीवन से समझ सकते हैं। बहुत से लोगों ने अंग्रेजों से माफ़ी माँगी और फिर खूब फ़ायदा उठाया। चन्द्र सिंह गढ़वाली ने जीवन में कभी माफ़ी नहीं माँगी।

महापंडित त्रिपिटकाचार्य राहुल सांस्कृत्यायन ने उनकी जीवनी लिखी। एक सिपाही की जीवनी "वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली," वे चाहते तो किसी बड़े आदमी की जीवनी लिख सकते थे जिससे मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा सब मिलता लेकिन उन्होंने एक हवलदार की जीवनी लिखी। वे जानते थे कहने के वीर, स्वयंभू वीर, बहुत से होंगे लेकिन चन्द्र सिंह गढ़वाली जैसा वीर, योद्धा कोई दूसरा नहीं हो सकता। चन्द्र सिंह के जीवन में कितने मोड़ आये यह बात संक्षिप्त रूप से ऐसे भी समझी जा सकती है कि वे पहले गाँव में बचपन में भी भड़ कहलाते थे, पढ़ने लिये पिता से विद्रोह किया, भाग कर सिपाही बने, फिर प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस में जर्मनों से लड़े, मैसोपोटोमियां इराक़ में लड़े, अफ़ग़ान युद्ध लड़े, वे आर्य समाजी बने, कांग्रेसी बने, और अन्त में समाजवादी होकर इस लोक से विदा हुए। कामरेड पी सी जोशी, कामरेड यशपाल, कामरेड रमेशचन्द्र गुप्त, रक्षित राय, कामरेड ज्वाला प्रसाद, ऐसा कोई नहीं जिसको वे नहीं जानते थे और वे इन्हें नहीं जानते थे। गांधी, नेहरू, महावीर, जमना लाल बजाज सब उन्हें बड़ा भाई के नाम से पुकारते थे।

आज़ादी के आन्दोलन में जहां गांधी जी के विचार कुछ थे तो नेहरू जी के कुछ अलग। गांधी जी देश में कुटीर उद्यों के हिमायती थे लेकिन नेहरू समाजवाद के पक्षधर। वे 1936 में जब जेल से निकले तो नेहरू जी ने कहा "मैं इस नतीजे पर पहुँच गया हूँ कि दुनियां की समस्याओं और भारत की समस्याओं का समाधान समाजवाद में ही निहित है। और जब मैं इस शब्द समाजवाद को इस्तेमाल करता हूँ तो किसी अस्पष्ट मानवीयतावादी अर्थ में नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक आर्थिक अर्थ में" करता हूँ (इंडिया एंड द वर्ल्ड पृष्ठ 82)।

चन्द्र सिंह ने आर्य समाजी से लेकर गांधीवादी और आख़िर में वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनकर मृत्यु पर्यन्त तक बने रहे। नेहरू के संपर्क में वे भी जेल में समाजवादी बने। जिस तरह नेहरू के समाजवाद पर के दामोदरन ने लिखा "जवाहर लाल नेहरू के लिए समाजवाद केवल एक आर्थिक प्रणाली नहीं थी वह एक जीवन दर्शन था। समाजवाद भारत से कंगाली, बेरोजगारी, निरक्षरता, हरीरी- बीमारी और गंदगी मिटाने के लिए ज़रूरी थान, वरन मानव व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए भी ज़रूरी था" (भारतीय चिंतन परंपरा के दामोदरन पृष्ठ 487)।

प्रधान मन्त्री के रूप में जब नेहरू जी की चन्द्र सिंह गढ़वाली से मुलाक़ात हुई तो अपने पेशावर कांड के साथी सैनिकों को पेंशन चाहते थे। वे नेहरू जी से मिले "प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू" बड़े प्रेम से मिले हाथ मिलाकर नेहरू ने पूछा क्या चाहते हो ?

बड़े भाई ने कहा "पेशावर कांड के सैनिकों का मेमोरेंडम लेकर आया हूँ " और उसे नेहरू के हाथ में देकर कहा "पेशावर कांड को रांष्ट्रीय पर्व समझा जाय और सैनिकों को पेंशन दी जाय"।

मान्यता की बात सुनते ही दो मिनट वाले नेहरू आकर उपस्थित हो गये और उबल उठे –"मान्यता ?" "तुम बागी हो।"

बड़े भाई उनका मुँह ताकने लगे जिस नेहरू ने उन्हें एक समय लखनऊ के विद्यार्थियों के सामने बड़े भाई को वीर कहा, और उनके पिता की मृत्यु शय्या पर पड़े हुए गाँधी और नेहरू के सामने कहा था कि गढ़वाली सैनिकों को न भूलना।

"बड़े भाई तुम्हें पेंशन नहीं मिल सकती तुम बाग़ी हो"। इस बात पर बहस करने के बाद वे ग़ुस्से में प्रधान मन्त्री आवास से निकल गये (आज का भारत रजनी पाम दत्त हिन्दी पृष्ठ 333)। ठीक इसी तरह का उत्तर गांधी जी ने 1932 में फ्रांसिसी पत्रकार को दिया था। इस तरह से एक चन्द्र सिंह देश के लिए समर्पित होते हुए भी शासन के सामने बागी ही रह गये।

आज अपने ऐसे योद्धा का स्मरण करते हुए हम गर्व कर सकते हैं। अंग्रेजों के तो वे ख़िलाफ़ थे लेकिन आज़ाद भारत की सरकारों ने भी उनके साथ न्याय नहीं किया इस बात का दुख उन्हें रहा और हमें भी रहना चाहिए। हमे महान लेखक, घुम्मक्ड़, विद्वान, बहु भाषा विद, पंडित राहुल सांस्कृत्यायन का भी कृतज्ञ होना चाहिए जिन्होंने वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली की जीवनी लिख कर भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया।

श्रोत एवं संदर्भ

1. इसमें जो भी सूचनाएँ हैं वे सभी "वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली", राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा लिखी गई पुस्तक से हैं। किताब महल द्वारा प्रकाशित, 2020.
2. भारत का इतिहास, लेखक को० ओ० अन्तोनोवा, ग्रि० म० बोंगर्द, ग्रि० ग्रि० कोतोवस्की , प्रगति प्रकाशन मास्को, 1984.
3. आधुनिक भारत, सुमित सरकार, राज कमल प्रकाशन, 1993.
4. आज का भारत, रजनी पाम दत्त.
5. के. दामोदरन, भारतीय चिंतन परंपरा.
6. जवाहर लाल नेहरू, इंडिया एंड दि वर्ल्ड.